om-21 shivratri-2014-final -print_Layout 4 1/20/2014 7:28 PM Page 4

आत्मा-परमात्मा का महा मिलन मेला

माउण्ट आबू में समूचे विश्व में महिलाओं का सबसे बड़ा संगठन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विधालय ही एक ऐसी जगह है जहां आत्मा परमात्मा के मिलन का साक्षात महाकुंभ होता है। बात सुनने में भले ही अविश्वसनीय प्रतीत हो किंतु यह सत्य है और यह मिलन महफिल पिछले 78 वर्षों से निरंतर जारी है। ज्ञान गंगा में स्नान कर आत्माएं पावन बनकर नारी से श्रीलक्ष्मी और नर से नारायण बनने की नाव में सवार हो गये हैं। नाव का खिवैया आप सभी महान आत्माओं का पुनःआह्वान कर रहा है इस नाव में सवार होने के लिए। दुनिया के किसी भी कोने में आप जाइए वहां ये चैतन्य ज्ञान गंगाएं पतितों को पावन बनाने के कार्य में पुरुषार्थ कर रही हैं। इस संस्था की बागडोर माताओं-बहनों के हाथ में है। इतना ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में तेजी से बढ़ रहे अन्याय, अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार, अश्लीलता, सम्बन्धों में हो रही गिरावट को रोकने और एक बेहतर, स्वर्णिम सृष्टि का सृजन करने में अपनी महती भूमिका निभा रही है। ये श्वेत वस्त्रधारिणी, राजयोगिनी, बाल ब्रह्मचारिणी, ब्रह्माकुमारियां सभी मनुष्य आत्माओं को सहज राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान देकर स्वयं तथा परमात्मा के परिचय के साथ ईश्वरीय मिलन का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

परमात्मा ने ब्रह्मा को बनाया माध्यम

चूंकि परमात्मा का अपना शरीर नहीं होता है। कहा जाता है बिन पग चले सुनै बिन काना, कर्म करहूँ, केहि विधि नाना। सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिन्ध (जो अभी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का बिल्कुल एक छोटे स्तर से प्रारम्भ हुआ क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की ज़रूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके कि यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। उस दौरान चूंकि परमात्मा को भारत और वन्दे मातरम् की गाथा को चरितार्थ करना था। इसलिए माताओं बहनों के सिर पर ही ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

कठिन तपस्या से विश्व-परिवर्तन की रखी नींव

परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को और शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारम्भ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं और बहनें तथा कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी आध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है।

1950 में माउण्ट आबू में हुआ स्थानान्तरण

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू आई। माउण्ट आबू में से ही पूरी दुनिया में ईश्वरीय निर्देशन में आध्यात्म और परमात्मा के अवतरण के आने की सूचना और विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ।

संस्था का फैलाव आज विश्व भर में

78 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई यह संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। ब्रह्माकुमारीज़ के पूरे विश्व के 137 देशों में नौ हजार से भी ज्यादा सेवा केन्द्रों के माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना तथा उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा जारी है। आज दुनिया भर से लोग परमात्मा के अवतरण में उनसे मिलन मनाने के लिए आते हैं।

परमात्मा शिव को मिलने यहाँ हज़ारों की संख्या में लोग आते हैं। वे आज भी दादी हृदयमोहिनी के माध्यम से लोगों को मिलते हैं। यहाँ सब वर्ग-समुदायों के लोग परमात्मा से मिलन मनाकर पवित्रता की उच्चतम स्थिति को प्राप्त करते हैं। स्वयं-भू आज माता-पिता के रूप में गुणों व शिक्षाओं से श्रृंगारित करते हैं। जिन्हें लोग ढूंढ़ रहे थे, आज वे उन आत्माओं की प्यास बुझा रहे हैं।

अमृतवेले बाबा सुनाता है मुरली

मेरे जीवन में इस ज्ञान से बहुत बदलाव आया है। पहले मैं अपसैट हो जाती थी परन्तु अब कैसी भी परिस्थिति हो मैं शान्ति महसूस करती हूँ। क्रोध पर मैंने 90 प्रतिशत काबू पा लिया है। जब मैं योग में बैठती हूँ तो मुझे बहुत अच्छे अनुभव होते हैं। कभी-कभी तो अमृतवेले मुझे मानो बाबा उसी दिन की मुरली सुना देता है। बाबा से पहली बार मिलने पर मैंने जब उनकी आंखें देखीं तो मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैं उन्हें जन्म-जन्मांतर से देखती ही आ रही हूँ। मैं अब भगवान की बच्ची बन गई हूँ। मुझे लगता है मानो वो पल-पल साथ ही है।

-तेजश्री परवाल, ज्वेलर्स, जयपुर

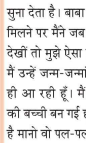

माउण्ट आबू ही परमात्म मिलन की पवित्र भूमि

यहाँ आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है और देही-अभिमानी बनने का ज्ञान प्राप्त होता है। मैंने यह सीखा कि हम खुद को ही बदल सकते हैं, औरों को नहीं। पहले निश्चय नहीं था परन्तु जब मधुबन होकर आई तो धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा और यह पूर्णतः विश्वास हो गया कि हम आत्माएं हैं और सबका अपना-अपना पार्ट है। माउण्ट आबू आकर सच में ऐसा एहसास होता है कि हम स्वयं परमात्मा से मिल रहे हैं। मैंने दुनिया की तड़क-भड़क बहुत देखी है पर जो शान्ति बाबा के यहाँ आके मिली वो कहीं भी नहीं है। परमात्मा का ज्ञान मेरे लिए सुकून बनके आया और अब तो लगता है कि यही जीवन की प्राथमिकता है।

-दिव्या गोयल, जयपुर, गार्मेंट एक्सपोर्टर एवं अंतर्राष्ट्रीय फैशन डिज़ाइनर

परमात्म मिलन से रोम-रोम हुआ पुलकित

जब मेरा संस्था से परिचय हुआ तो मुझे बहुत उत्सुकता हुई कि परमात्मा का मनुष्य आत्माओं से मिलन, उनकी रूहानी दृष्टि, व मधुर बोल कैसे होंगे? मेरे जीवन का वह सुनहरा पल आया जब मैं नवम्बर 2010 आबू में अपने परमपिता परमात्मा शिव जो सर्व आत्माओं के पिता हैं, जिन्हें हम प्यार से शिव बाबा कहते हैं। उनके मिलन से, उनकी दृष्टि से रोम-रोम पुलकित हो गया। अन्दर से निश्चय हो गया कि जीवन को सही दिशा मिल गई। ऐसे परमात्म मिलन का सुख प्राप्त करने हेतु मैं हर वर्ष एक बार आबू अवश्य जाती हूँ। अपने को सौभाग्यशाली समझती हूँ।

-डॉ.सविता आनन्द, आई.एफ.एस, जयपुर (राज.)

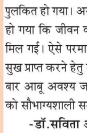

परमात्मा मिलने के बाद नज़रिये में आया बदलाव

इस ईश्वरीय ज्ञान से हमारे लाइफ के प्रति जो सोचने का नज़रिया होता है वो बिल्कुल ही बदल जाता है। ये एक बिना दवाई के वण्डरफुल ट्रीटमेंट है। मन की ऐसी कई बीमारियां हैं जिनकी कोई दवाई नहीं की जा सकती, लेकिन यहां मेडिटेशन के प्रैक्टिस से तथा परमात्मा की याद से ये बीमारियां पूरी तरह ठीक हो जाती हैं। पहली बार जब मैं बाबा से मिला तो मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे और आज भी मैं बाबा के उस मिलन को भूल नहीं पाता। **-डॉ.एस.पी.लोचड,** सीनियर साइन्टिस्ट, हेल्थ फिज़िक्स डिपार्टमेंट, न्यूक्लियर साइंस सेंटर, नई दिल्ली

बाबा की स्मृति रहती है सदा मेरे मन में

मैं 22 वर्षों से ज्ञान में हूं। यहाँ पर पवित्रता की शिक्षा दी जाती है। मेरे लिए यह सबसे महत्वपूर्ण विषय है जो और किसी भी विश्व विद्यालय या अन्य किसी भी संस्था में नहीं बताया जाता। यहाँ योग के द्वारा दिव्य दृष्टि दी जाती है जिसके द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार कराया जाता है, यह दिव्य दर्शन है। नर से नारायण बनने की कला यहाँ ही सिखाई जाती है। बाबा की स्मृति मेरे मन के तार को हमेशा झंकृत करती रहती है। **-डॉ.अजय जैन,** फिज़ीशियन, ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसिस, नई दिल्ली

यहाँ ईश्वर के पास बैठे होने की होती है अनुभूति

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा समग्र ज्ञान का प्रकाश जो समूर्ण सृष्टि में विस्तारित होता है इससे सहज रूप से ये प्रतीत होता है कि वाकई ये संस्था ज्ञान का एक उत्कृष्ट केन्द्र है और स्वाभाविक रूप से इसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय कहा जाना उचित है। यह आध्यात्मिक ज्ञान सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक ऐसा पाथेय है जिससे मनुष्य का नैतिक जीवन तो सुधरता ही है और साथ-साथ उसका अन्तर्मन भी निर्मल होता जाता है। इस संस्था में कदम रखने मात्र से ही मनुष्य के जीवन में कई सारे श्रेष्ठ बदलाव आ जाते हैं। इस संस्था में आकर परमात्म शक्ति का जिस तरह से अन्तर्बोध होता है तो यह अनुभव होता है कि यह ईश्वर की प्रत्यक्षता का ही प्रमाण है। जब भी मैं इसके सत्संग में बैठता हूं तो मुझे स्वतः अनुभूति होती है कि मैं ईश्वर के पास बैठा हूं और उनसे शक्तियां मिल रही हैं। **-मधुकर द्विवेदी,** वरिष्ठ पत्रकार, रायपुर

इस संस्था को चला रही अव्यक्त सत्ता परमात्मा शिव ही हैं

मैं 1974 में पत्रकारों और साहित्कारों की वर्कशॉप के अन्तर्गत इस संस्था के संपर्क में आया जहां हमारा राजयोग शिविर भी कराया गया। हमें जो ज्ञान दिया गया उस ज्ञान में मुझे बहुत तार्किकता और वैज्ञानिकता लगी। इसमें कोई भेदभाव, दिखावा, आडंबर जैसा कुछ भी नहीं था। और मुझे अनुभव हो रहा था कि ऐसा ज्ञान कोई सामान्य व्यक्ति नहीं दे सकता। जब मैं बाबा से मिला तो मुझे लगा कि कोई अव्यक्त सत्ता ज़रूर है जो इस माध्यम का उपयोग करके हमको ज्ञान दे रही है और वो सत्ता लोक-कल्याण और व्यक्ति कल्याण का ध्येय लेकर बात करती है तथा वो सत्ता हमारे पिता परमात्मा शिव ही हैं यह भी मुझे निश्चय हो गया। इस संस्था द्वारा दिया जाने वाला ज्ञान इस रावण राज्य रूपी दुनिया को रामराज्य अर्थात् सतयुग, स्वर्ग में परिवर्तित करने के लिए है।

-प्रो. कमल दीक्षित, संपादक, राजी-खुशी पत्रिका, इंदौर।

मधुबन में बाबा मिलन पर मैं दूसरी दुनिया में पहुँच गया

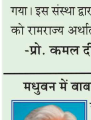

यहाँ स्वयं परमात्मा शिव बाबा से योग लगाना सिखाया जाता है जिससे मनुष्य का चारित्रिक विकास होता है। इस विश्वविद्यालय में परमात्मा खुद पढ़ाते हैं ब्रह्मा के तन का प्रयोग करके। एक से अधिक बार मैं खुद परमात्मा के रूबरू हुआ हूँ और अत्यंत शान्ति का अनुभव किया है। मन में कोई विकार न आए उसकी प्रेरणा मिलती रही। जब बाबा से मैं मधुबन में मिला तो मानो एकदम ही खो गया, जैसे किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गया हूँ। फिर जब मुरली खत्म हो गई तो मेरी युगल ने मुझे झकझोरा तब कहीं होश आया। यहाँ आकर मैंने यह सीखा है कि किसी की भी कमी-कमज़ोरी को चित्त पर नहीं रखना है। इससे यह फायदा है कि हम स्वयं भी विकृतियों से दूर रहेंगे।

-गोविंद वोरा, संपादक, अमृत संदेश, रायपुर

ईश्वरीय सत्ता ही कर रही है यहाँ कार्य

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक अनोखा विश्वविद्यालय है जो अतुल्य है। मैं कई बार माउण्ट आबू गया हूँ परन्तु यहाँ के जो नियम हैं, ज्ञान है, योग की शिक्षा है, सहज धारणाएं हैं और सेवाभाव है, कहीं और नहीं देखा। छोटे से छोटे कार्यकर्ता से लेकर बड़ी दादियों तक को मैंने अपनी आंखों से देखा है पर ऐसा अनुशासन, स्वच्छता और सादगी कहीं नहीं है। इस विश्वविद्यालय को देखकर यह आभास होता है कि यह कार्य ईश्वरीय सत्ता के अलावा कोई नहीं कर सकता।

-श्री चंद्रशेखर स्वामी जी, हुक्केरी मठ - बेलगाम

बाबा मिलन पर हुआ दिव्य अनुभव

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ही दिया जाता है। यहाँ योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई।

-रसिक पीठाधीश महंत जनजेयशरण, अध्यक्ष श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट, बड़ा स्थान, अयोध्या

बाबा से मुलाकात जीवन के सबसे सुखदाई पल

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एकसाथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई नगर है तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है। साकार बाबा से मेरी 3 मुलाकातें हुई और वे मेरे जीवन के सबसे सुखदाई पल थे।

-डॉ.स्वामी केशवानंद सरस्वती, काशी

बाबा के सानिध्य में छोटे बच्चे जैसा अनुभव हुआ

समस्त विश्व में ऐसी व्यवस्था नहीं है जैसी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में है। यह अनुभव करने की बात है, बयान करने की बात नहीं है। मैं जब माउण्ट आबू में परमात्म मिलन के अवसर पर पहुँचा तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे एक छोटे बच्चे को अपने घर में मां-बाप की गोद में होता है। ऐसा लगा मानो वो मुझे सहला रहे हैं। यहाँ के पवित्र वातावरण और व्यवस्था जैसी पारदर्शिता संसार में और कहीं नहीं।

- महामण्डलेश्वर दर्शन सिंह त्यागमूर्ति, अध्यक्ष षड्दर्शन साधु समाज एवं धर्म स्थान सुरक्षा ट्रस्ट, हरिद्वार

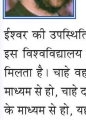

अव्यक्त बाबा से मिलन एक अनोखा अनुभव

ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव इस विश्वविद्यालय में देखने को मिलता है। चाहे वह मुरलियों के माध्यम से हो, चाहे दादियों-दीदियों के माध्यम से हो, यहाँ जो वाणियाँ सुनने को मिलती हैं वे साक्षात ईश्वर की ही लगती हैं। जो जीने का ढंग इस संस्था में बताया जाता है वह सब सम्प्रदायों से उठकर है और समाज के उत्थान के लिए है। अव्यक्त बाबा से मिलने पर भी मेरा अनोखा अनुभव रहा। ऐसा प्रतीत हुआ कि दादी नहीं, वहाँ ब्रह्मा बाबा ही बैठे हैं।

-जसवीर सिंह, राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष।

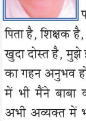

बाबा मुझे हर कदम पर गाइड करते हैं

परमात्मा हमारा पिता है, शिक्षक है, सद्गुरु है और खुदा दोस्त है, मुझे इन सभी रिश्तों का गहन अनुभव होता है। साकार में भी मैंने बाबा को देखा और अभी अव्यक्त में भी देख रहे हैं। हमें हर कदम पर गाइड करते है, संभालते हैं जैसे माँ-बाप संभालते हैं बच्चे को गिर जाने पर, ठीक वैसे ही। अगर कभी भी भटक जाएं तो उससे हमें टचिंग होती है कि बच्चे यह ठीक नहीं है। बाबा शिक्षक बनके हमें ज्ञान की पराकाष्ठा कराता है।

-ब्र.कु.सुषमा, क्षेत्रीय संचालिका जयपुर

पीस ऑफ माइंड चैनल - ईश्वरीय उपहार

आज के इस आधुनिक युग में परमात्म अवतरण व उनके द्वारा हो रहे विश्व परिवर्तन की जानकारी सभी को प्रदान करने में विज्ञान की अहम भूमिका के अन्तर्गत एक ऐसा चैनल जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित व प्रसारित होता हो। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा संचालित पीस ऑफ माइंड चैनल एक अमूल्य ईश्वरीय उपहार है। इसे केबल टी.वी., रिलायंस तथा वीडियोकॉन d2h पर देखा जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 9414153999, 8302022022, email - karunabk@gmail.com

परमात्म मिलन पर एक शक्ति मुझमें प्रवेश हुई

शास्त्र तो किसी व्यक्ति विशेष ने लिखे हैं। यहाँ भगवान खुद पढ़ाता है, नई-नई शिक्षाएं देता है। अगर समाज इस ज्ञान को पूरा उठा ले तो सुधार निश्चित है। पहली बार परमात्मा से मिलने पर लगा कि एक शक्ति मुझमें प्रवेश हो रही है। मैंने खुद को यज्ञ के प्रति समर्पित भी कर दिया है। ब्रह्माकुमारीज़ में जो ज्ञान दिया जा रहा है वो सर्वोत्तम है और इससे ही दुनिया में बदलाव आएगा। **-डॉ.गुप्ता,** जयपुर

ईश्वरीय संदेश

इस वर्ष हम निराकार परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण की 78वीं त्रिमूर्ति शिव जयंति मना रहे हैं। जहाँ एक ओर शिव परमात्मा अनेक आध्यात्मिक रहस्यों को उजागर करके दैवी-स्वराज्य की स्थापना का दिव्य कर्म कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इस पुरानी पतित सृष्टि के विनाश के लिए आणविक अस्त्रों का जखीरा भी तैयार हो चुका है। साथ-साथ में प्राकृतिक आपदाएं भी उग्र रूप धारण कर रही हैं। तापमान में वृद्धि, भूकंप, मौसम में बदलाव इत्यादि प्राकृतिक असंतुलन भी ज़ोर पकड़ रहे हैं। यह पुरानी दुनिया के अंत का स्पष्ट संकेत है। अतः सर्व मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमंत्रण है कि वर्तमान संगमयुग में निराकार परमात्मा शिव व स्वयं को यथार्थ रीति से पहचानकर निकट भविष्य में आनेवाली नई दैवी-संस्कृति, सतोप्रधान दुनिया के अपने जन्मसिद्ध ईश्वरीय वर्से को प्राप्त करें। परमात्म ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा अपने तमोगुणी संस्कारों का विनाश करें और दिव्य गुणों को धारण करें। इसकी अधिक जानकारी के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के नज़दीकी सेवाकेन्द्र पर सम्पर्क करें।

स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता:

ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन, जानकारी के लिए सम्पर्क करें: मो. 9414154344, 9414006096, 9414182088
email- mediabkm@gmail.com, bkdillip@gmail.com